❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 44, अंक 32 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 28 जून, 2021 से रविवार 4 जुलाई, 2021
विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122
दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

देश में धर्मान्तरण की निरन्तर होती घटनाएं एवं प्रदर्शन

देशभर में धर्मान्तरण का विरोध प्रदर्शन : कानून की मांग

भारत में धर्मान्तरण का रोग आजादी से पहले से ही चला आ रहा है। मध्य प्रदेश के आदिवासी बहुल इलाके मंडला का इतिहास बताता है कि धर्म प्रचार के नाम पर ईसाई मिशनरियों ने 1818 से धर्मान्तरण का कार्य आरंभ कर दिया था। धर्मान्तरण के लिए ये लोग निर्धन, असहाय लोगों को डर, भय और लोभ देकर धर्मान्तरित करते थे। धर्मान्तरण के इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए 1830 से पहले ही मध्यप्रदेश के जबलपुर में ईसाई मिशनरियों का कार्यालय भी स्थापित हो गया था उसके लिए 1831 में सर डोनाल्ड वहां के डिप्टी कमिश्नर भी बनाए, जिन्हें बाद में 1840 में जबलपुर का डिप्टी कमिश्नर भी बनाया गया। इस छल छदम वाले धर्मान्तरण को बढावा देने के लिए बर्लिन में योजना बनी और 6 युवकों को भारत में भेजा गया। उन्होंने मंडला जिले के सुदूर आदिवासी क्षेत्रों में धर्मान्तरण का कार्य किया करते थे। सन 1912 में मंडला में 871 आदिवासी बन्धु इसाई बन गए और देखते ही देखते वहां 5 चर्च बनाए गए, पटपरा में कुछ रोगियों के लिए अस्पताल, अनाथालय और स्कूल खोले गए। ईसाइयों का मिशनरी दफ्तर भी खोला गया। जिससे ईसाई मिशनरियों का जाल पूरे देश में फैलता चला गया और यह क्रम आज भी लगातार चला रहा है। भारत के पूर्वोत्तर के राज्यों में ईसायत के प्रचार-प्रसार के नाम पर धर्मान्तरण का कार्य भी जोर-शोर से चलता रहा और इसके साथ-साथ मुस्लिम समुदाय के लोग भी अपने प्रचार प्रसार के नाम पर छल छदम की नीति से हिंदुओं को मुसलमान बनाते चले गए। धर्मान्तरण के इस खेल में आजादी के बाद और तेजी आई। आदिवासियों में गरीब, निर्धन लोगों को आज पूर्वोत्तर के राज्यों में जहां हिंदुओं की संख्या अधिक थी वहां आज 80 से 85 प्रतिशत तक गैर हिंदू जो अपने आपको अल्पसंख्यक कहते हैं उनकी हो गई। इसके जवाब में आर्य समाज ने हमेशा आवाज उठाई और धरातल पर ऐतिहासिक कार्य किए, महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा से धर्मवीर पंडित लेखराम जी ने हिंदुओं की घर वापसी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करके हजारों लोगों को स्वेच्छा से शुद्धि अभियान चलाकर पुन: आर्य बनाया। आर्य समाज द्वारा यह परमार्थ का कार्य लगातार चलता रहा। इस क्रम में अमर क्रांतिकारी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने भी लाखों हिंदुओं को जो भोलेपन में, बहकावे में आकर धर्मान्तरण शिकार हो गए थे उनकी घर वापसी पूरे विधि विधान से कराई। आजादी के बाद धर्मान्तरण को रोकने के लिए सन 1954 में लोकसभा में एक विधेयक प्रस्तुत किया गया, नियोगी कमीशन तथा देबर कमिशन को जांच का

....धर्मान्तरण की इस जालसाजी को लेकर आर्य समाज भी पूरी शक्ति के साथ केन्द्र सरकार से मांग करता है कि सैंकड़ो वर्षों से चल रहे धर्मान्तरण के घृणित अपराध पर केवल उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में ही विरोधी कानून नहीं होना चाहिए बल्कि पूरे देश में जबरन धर्मान्तरण के विरोध में सख्त कानून बनना चाहिए और जो लोग छल कपट और जबरन धर्मान्तरण करा रहे हैं उनके ऊपर कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। क्योंकि हमारा देश अपनी संस्कृति और संस्कारों के बल पर ही विश्व गुरु रहा है, अगर इस तरह से कुछ समुदाय के लोगों के द्वारा धर्मान्तरण किया जाता रहा तो न ही हमारी संस्कृति बचेगी न हमारे संस्कार बचेंगे। इसलिए समय रहते केंद्र सरकार को इस घृणित अपराध के ऊपर विशेष ध्यान देना चाहिए और एक कठोर कानून बनाकर देश की गरिमा को सुरक्षित करना चाहिए। आज पूरे देश में जगह जगह धर्मान्तरण के विरोध में आवाज उठ रही है। आर्यसमाज मेरठ उ.प्र. सहित पूरे देश की आवाज मानकर शीघ्र अति शीघ्र ठोस कानून बनाने की आर्य समाज मांग करता है।......

- शेष पृष्ठ 8 पर

महर्षि दयानन्द के बारे में भ्रामक प्रचार : लिंग, विद्यालय एवं समाज की जलाई प्रतियां

सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी के नाम पत्र लिखकर प्रकाशक ने मांगी माफी

बी.एड. द्वितीय वर्ष की पुस्तक में महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज को लेकर भ्रामक एवं गलत तथ्यों की दी थी जानकारी

भारत की ऋषि परंपरा में महर्षि दयानंद सरस्वती जी का स्थान अग्रणी है। महर्षि ने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव कल्याण के लिए समर्पित कर देश और दुनिया को सुदिशा प्रदान की। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि जी ने समाज में फैली कुरीतियों, ढोंग, पाखण्ड और अंधविश्वास को दूरकर ईश्वर की वाणी वेद का प्रचार किया। अभी पिछले दिनों बी.एड. द्वितीय वर्ष की पुस्तक 'लिंग, विद्यालय और समाज' में लेखक ने भ्रामक और अनुचित जानकारी देने का अनैतिक कार्य किया। जैसे ही यह जानकारी आर्य समाज को पता चली तो आर्य समाज के अधिकारी, कार्यकर्ताओं ने इसका पुरजोर विरोध किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देश पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान मा. रामपाल जी के नेतृत्व में इस निराधार पुस्तक को जलाकर विरोध किया गया। पुस्तक के प्रकाशक लक्ष्मी बुक डिपो के मालिक ने स्वयं आकर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी के नाम लिखित में माफीनामा दिया।

- शेष पृष्ठ 4 पर

GSTIN : 06ABTPG0519Q1Z7

लक्ष्मी बुक डिपो

दुकान नं. 96 हांसी गेट, भिवानी 127021

Rajiv Gupta : 9416243575
: 9812610779
Atul Gupta : 9467601285
Email laxmibhiwani@gmail.com

Ref. No Dated

सेवा में,

श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
नई दिल्ली
द्वारा प्रधान,
आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा
दयानन्द मठ, रोहतक

श्रीमान् जी,

निवेदन है कि हमारे प्रकाशन लक्ष्मी बुक डिपो, हांसी गेट, भिवानी से प्रकाशित बी.एड. द्वितीय वर्ष की पुस्तक लिंग, विद्यालय तथा समाज में पेज नं 71 पर दिये गये आर्य समाज से संबंधित सामग्री में हुई त्रुटियों की जानकारी हमें प्राप्त हुई है। इन त्रुटियों की गम्भीरता को समझते हुए हम तुरन्त प्रभाव से इन्हें ठीक करवा रहे हैं। इस कार्य में हम जरा सा भी विलम्ब नहीं करेंगे। साथ ही भविष्य में भी इस प्रकार की कोई गलती न हो इसका हम पूरा ध्यान रखेंगे।

हम आपको आश्वस्त कराना चाहते हैं कि हमारी मंशा किसी भी समाज की भावनाओं को आहत करने की नहीं है। किताब में हुई त्रुटियों के लिए हमें खेद है। हम इसके लिए क्षमा प्रार्थी हैं।

धन्यवाद।

'प्रकाशक'
Rajiv

लक्ष्मी बुक डिपो, हांसी गेट, भिवानी
राजीव गुप्ता

देववाणी-संस्कृत

किस पाप से तेरे दर्शन नहीं होते

वेद-स्वाध्याय

पृच्छे तदेनो वरुण दिदृक्षुः उपो एमि चिकितुषो वि पृच्छम्।
समानमिन्मे कवयश्चिदाहुः अयं ह तुभ्यं वरुणो हृणीते।। - ऋ. 7/86/3
ऋषिः वसिष्ठः।। देवता-**वरुणः।।** छन्दः **निचृत्त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **वरुण**=हे पापनिवारक देव! **तत् एनः पृच्छे** = मैं उस पाप को तुझसे पूछता हूँ (जिसके कारण मुझे तुम्हारा दर्शन नहीं हो पाता) **दिदृक्षुः** = मैं तुम्हारा दर्शनाभिलाषी हूँ **वि पृच्छम्** = इस विषय में विविध प्रश्न पूछने के लिए मैं **चिकितुषः** = विद्वानों के **उपो एमि** = पास जाता हूँ, परन्तु **कवयः चित्** = वे सब ज्ञानी पुरुष भी **समानं इत् में आहुः** = मुझे एक ही उत्तर देते हैं- एक ही बात कहते हैं- कि "**अयं वरुणः ह** = निश्चय से यह वरुणदेव ही **तुभ्यं हृणीते** = तुझसे अप्रसन्न है; उसे प्रसन्न कर!"

विनय-हे प्रभो! मैं तेरे दर्शन पाने के लिए व्याकुल हूँ। तुझसे साक्षात् मिलने के लिए दिन-रात प्रतीक्षा में हूँ। इसके लिए यत्न करते हुए बहुत दिन हो गये। ऐसा एक भी साधन नहीं छोड़ा जो तुझसे मिलानेवाला प्रसिद्ध हो। कठोर-से-कठोर तप बड़े आनन्द से किये हैं। तो अब कौन-सा पाप रह गया है जिससे तुम्हारे चरणदर्शन नहीं हो पाते? हे वरुण! तुमसे ही पूछता हूँ, मुझे मालूम नहीं। मुझे मालूम होता तो मैं कब का प्रतीकार कर चुका होता। हे पाप-निवारक! तुम ही मुझ दर्शन-पिपासु को वह मेरा अपराध बतलाओ जिससे अप्रसन्न होकर तुम मुझे दर्शन नहीं देते। जिन्हें मैं मनुष्यों में ज्ञानी, भक्त, विद्वान्, महात्मा देखता हूँ उन सबके पास जाता हूँ और जाकर यही पूछता हूँ कि मुझे वरुणदेव के दर्शन क्यों नहीं होते? परन्तु वे सब क्रान्तदर्शी महात्मागण भी मुझे एकस्वर से यही बतलाते हैं कि वह वरुणदेव ही तुझसे नाराज है। वे सब सच्चे ज्ञानी मुझे यही एक उत्तर देते हैं। तो, हे देव! या तो मेरा पाप मुझे दिखला दो, अपनी अप्रसन्नता का कारण बतला दो, नहीं तो मुझे दर्शन दे दो। हे मेरे स्वामिन्! जब मुझे अपने पाप का पता ही न लगेगा तो मैं उसका प्रतीकार कैसे कर सकूँगा? मैं तुम्हें प्रसन्न करके छोड़ूँगा। अपने पापों के प्रतिविघात के लिए मैं घोर-से-घोर प्रायश्चित्त करने को तैयार हूँ। अपने को पूरी तरह पवित्र कर डालने के लिए आज मैं क्या नहीं कर डालूँगा! मैं अब तुझसे मिल जाने के लिए व्याकुल हो उठा हूँ। इसलिए, हे अन्तर्यामी प्रभो! मैं तुझसे अपने पापों को जानना चाहता हूँ। मेरे पापों के सिवाय इस संसार में और कोई वस्तु नहीं है जो अब मुझे तुमसे मिलने से रोक सके।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

मामले को साम्प्रदायिक बनाने के लिए श्री राम के नाम का प्रयोग

श्रीराम के नाम पर कैसा बवाल?

हा र्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र जी का चरित्र एक लम्बे कालखंड से हिंदुओं के जीवन मूल्यों का आदर्श है। एक ऐसे महापुरुष की छवि जो अपने व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन में मूल्यों का पालन करता है। लेकिन पिछले कुछ समय से महापुरुष श्री राम जी के आस पास राजनीति घूम रही है। अभी हाल ही में खबर बनी कि उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में एक मुस्लिम बुजुर्ग से जबरदस्ती जय श्री राम बुलवाया गया। मुस्लिम बुजुर्ग ने 4 अज्ञात लोगों पर पिटाई और जबरन दाढ़ी काटने का आरोप भी लगाया। फिर क्या था मीडिया टूट पड़ी, विपक्ष के बड़े हिस्से ने विलाप शुरू कर दिया। लेकिन शाम तक मामला साफ हो गया कि सभी आरोपी मुस्लिम थे और बुजुर्ग मौलवी ने ताबीज बनाया था जिससे एक आरोपी की पत्नी को गर्भपात हो गया। मौलवी ने अपने कुकर्म छिपाने के लिए ये जय श्री राम वाली कहानी गढ़ी और मीडिया ने नैरेटिव तैयार किया।

अब सवाल है कि इस नैरेटिव की आवश्यकता क्यों पड़ी! तो इसे समझने के लिए पिछली कई खबरों से गुजरते हैं। जब फ्रांस एंयरलाइन में मुस्लिम यात्री अल्लाह हू अकबर कहता है तो प्लेन में भगदड़ मच जाती है, जब लंदन के एक प्लेन में जैसे ही एक यात्री अपनी सीट पर बैठते ही अल्लाह-हु-अकबर कहता है, पास में बैठी एक "महिला" विमान में आतंकी-आतंकी का शोर मचा देती है। इसके अलावा पेरिस के ग्रैंड रेक्सँ सिनेमा में हॉलीवुड फिल्म 'जोकर' चल रही होती थी। दर्शक इस बेहतरीन फिल्म का आनंद ले रहे थे, तभी उनके बीच बैठा एक शख्स 'अल्लाह हू अकबर बोल देता है, सब डर जाते हैं, अंदर भगदड़ मच जाती है। पूरा सिनेमाघर ही खाली करवा दिया जाता है।

खैर जब ये खबरें दुनिया भर के न्यूज पेपरों में छपती है तो वर्ग विशेष के लोग खुद को अपमानित महसूस करते हैं। तब सोचा जाता है अब क्या किया जाये और शायद अंत में ये फाइनल होता है कि अब जय श्री राम को भी बदनाम किया जाये। क्योंकि पिछले कुछ समय ऐसी एक नहीं अनेक घटनाएँ सामने आई जिनमें मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र जी को लेकर बवाल मचाया गया।

किस्सा जुलाई 2019 का है इस दिन आज तक और इंडिया टुडे ने खबर चलाई कि उत्तर प्रदेश के चंदौली गाँव मो. खालीद ने "जय श्री राम" नहीं बोला, तो उसे आग में झोंक दिया गया। मगर चंदौली के एसपी संतोष कुमार सिंह ने इस बारे में बयान जारी करते हुए कहा कि पुलिस ने खालीद के बयानों में विरोधाभास पाया है। बच्चा जिस तरह से अलग-अलग लोगों को अलग-अलग बयान दे रहा है, उसे देखकर ऐसा लग रहा है कि जैसे उसे किसी ने ये सारी बातें सिखाई हैं। और जिस जगह के बारे में वो बता रहा है वहाँ की सीसीटीवी फुटेज में वो कहीं भी नहीं है। इससे साफ जाहिर हो रहा है कि खालीद किसी के सिखाने पर ये बयान दे रहा है।

इसके बाद तनिष्क के एक स्टोर का विडियो वायरल होता है। जिसमें कुछ लोग हंगामा करते हुए जय श्री राम जी के नारे लगा रहे थे। ये उन दिनों की बात है जब तनिष्क पर अपने एक विज्ञापन के माध्यम से लव जिहाद को बढ़ावा देने के आरोप लगे थे। लेकिन जब विडियो की जाँच की जाती है तो मामला दूसरा मिलता है। दरअसल लोग शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे थे लेकिन एनडीटीवी ने ब्रेकिंग चलाते हुए दावा किया था कि तनिष्क विवाद के चलते गुजरात के गाँधीधाम में तनिष्क के एक स्टोर पर हमला हुआ है।

फिर इसी दौरान अचानक टीवी स्टूडियो चीख पड़े और इस बार खबर थी कि झारखंड में भाजपा विधायक सीपी सिंह ने काँग्रेस विधायक इरफान अंसारी को जय श्री राम बोलने के लिए मजबूर किया। जबकि यह आधा सच था भाजपा नेता को विलेन की तरह से पेश करने के लिए मीडिया संस्थानों ने जान-बूझकर पूरे वीडियो का एक ही हिस्सा दिखाया था, जबकि विडियो का शुरूआती वो हिस्सा काट लिया जिसमें सीपी सिंह जय श्री राम पर काँग्रेस विधायक के कॉमेंट का जवाब दे रहे थे।

.....उत्तर प्रदेश के चंदौली गाँव मो. खालीद ने "जय श्री राम" नहीं बोला, तो उसे आग में झोंक दिया गया। मगर चंदौली के एसपी संतोष कुमार सिंह ने इस बारे में बयान जारी करते हुए कहा कि पुलिस ने खालीद के बयानों में विरोधाभास पाया है। बच्चा जिस तरह से अलग-अलग लोगों को अलग-अलग बयान दे रहा है, उसे देखकर ऐसा लग रहा है कि जैसे उसे किसी ने ये सारी बातें सिखाई हैं। और जिस जगह के बारे में वो बता रहा है वहाँ की सीसीटीवी फुटेज में वो कहीं भी नहीं है। इससे साफ जाहिर हो रहा है कि खालीद किसी के सिखाने पर ये बयान दे रहा है।.....

लेकिन अचानक एक बार खबर आई कि आफताब से जय श्रीराम बुलवाया गया, जबरन शराब पिलाकर मार डाला। इस घटना को मॉब लॉन्चिंग बताया जाने लगा। लेकिन जब जाँच में पाया गया कि कैब ड्राइवर आफताब जब बुलंदशहर में एक बुकिंग को छोड़ कर वापस लौट रहा था। तभी कुछ असामाजिक तत्व टैक्सी में बिना बुकिंग कराए ही बैठ गए, तभी सारा विवाद हुआ था।

इसके बाद अचानक एक खबर आई कि गफ्फार के साथ मारपीट, जबरन जय श्री राम बुलवाने का आरोप लगाया गया। ये घटना राजस्थान के सीकर में हुई थी। यहाँ गफ्फार नाम के एक ऑटो चालक ने आरोप लगाया कि उससे जबरदस्ती जय श्री राम बुलवाया गया। जनसत्ता, आजतक और नवभारत टाइम्स सहित कई मीडिया संस्थानों ने इस घटना को पूरा उछाला। जबकि जाँच में पाया गया कि आरोपितों ने उनसे जर्दा माँगा। इसके बाद हुई कहासुनी के बाद उन्होंने ऑटो ड्राइवर को खदेड़ कर उसके साथ मारपीट की। आरोपित शराब के नशे में थे और पहले भी लूटपाट की घटनाओं में संलिप्त रहे थे।

इसके बाद भी एक के बाद एक घटना आती रही चाहें इसमें तेलंगाना के भैंसा की हो। जिसमें कुछ महीनों पहले ही भैंसा में हिंदू समुदाय के खिलाफ दंगा भड़का था कि किसी ने मस्जिद की दीवार पर जय श्री राम लिख दिया। जबकि बाद में लिखने वाला मोहम्मद अब्दुल कैफ पाया गया था। लेकिन इनका नेरेटिव चलता रहा इस बार खबर आई कि वाराणसी में नेपाली का सिर मूँड़ा लिखा जय श्री राम। किन्तु जब इस खबर की सच्चाई सामने आई तो फिर सब चुपके से निकल लिए, क्योंकि वाराणसी के एसएसपी अमित पाठक ने खुलासा किया था कि वीडियो में नेपाली बता कर पेश किया जा रहा व्यक्ति मूल रूप से भारतीय है, उसका नाम धर्मेंद्र है, और एक हजार रूपये लेकर वीडियो शूट करवाने के लिए ये सब ड्रामा रचा गया था। यानि हर बार इनका जय श्री राम के पवित्र नारे को लेकर रचा गया नेरेटिव धूमिल हुआ। इन्हें मुंह की खानी पड़ी।

- शेष पृष्ठ 6 पर

अग्नि में दहन एवं वाष्पण

दहन या ज्वलन – किसी भी ज्वलनशील सामग्री के वायु या आक्सीकरण द्वारा जल जाने की क्रिया को दहन या ज्वलन कहते हैं। यह उष्मा यानी गर्मी पैदा करने वाली क्रिया है। इस क्रिया में ज्वालाएं आखों को दिख भी सकती है और नहीं भी। इस प्रकार ज्वलन के लिए हवा का आक्सीजन गैस या इसका अन्य स्रोत अवश्य ही चाहिए जिसके बगैर ज्वलन नही हो सकती है। ज्वलन के उत्पाद कार्बन डाईआक्साइड आदि गैसों द्वारा वायु प्रदूषित होता है। हवा अथवा ज्वलनशील सामग्री की आपूर्ति बंद कर ज्वलन को बंद किया जा सकता है। अत: ज्वलन से एक तो वायु की आक्सीजन जिसे प्राणवायु भी कहते हैं, की खपत, व्यय होने से वायु दूषित होता है। उसी आक्सीजन के साथ ज्वलन से पैदा होने वाली कार्बन डाईआक्साइड आदि गैसों के वायु में मिलने के कारण, दोहरे रूप से भी प्रदूषित होती है। इसे संपूर्णता में संज्ञान लेकर विचार कीजिए कि पदार्थों के ज्वलन से वायु, कैसे दोहरे रूप से प्रदूषित होता है। जिस तापमान पर हवा के आक्सीजन से रासायनिक क्रियाकर, जलना यानी दहन होना प्रारम्भ करती हैं, उस तापमान को उस सामग्री का "ज्वलन अथवा दहन या जलने का तापमान" जाना जाता हैं, जो प्रत्येक सामग्री की भिन्न भिन्न होती है। इस क्रिया में पदार्थ के समस्त रसायनें परिवर्तित होकर अन्य, एक से कई रसायनों में परिवर्तित हो जाते हैं जिसके समस्त भौतिक एंव रसायनिक गुण मूल पदार्थ के समस्त भौतिक एंव रसायनिक गुणों से सर्वथा भिन्न होते हैं। यह संज्ञान लेना आवश्यक है कि विश्व के सभी दहन यानी जल सकने वाले पदार्थ चाहे वह वनस्पति, पृथ्वी से निकला, ठोस, तरल, गैस, अमृत, जहर, सुगंधित, दुर्गधिंत आदि आदि हों जिनके दहन होने के फलस्वरूप हवा में केवल कार्बन डाईआक्साइड गैस के साथ कुछ अन्य गैसें सूक्ष्म मात्रा में, कुछ जल वाष्प के रूप में एंव अत्यधिक उष्मा ही उत्पन्न होकर हवा में फैलती है। कार्बन डाईआक्साइड गैस रगंहीन, गंधहीन, स्वादहीन हवा को प्रदूषित करने वाली ही होती है।

इसीलिये यदि घर में घरेलू गैस का सिलेंडर लीक कर, गैस हवा में फैल जाये यानी उसकी दुर्गधं आने लगे, तो ऐसी स्थिति में पूरे घर में कोई भी चीज जैसे दियासलाई, बिजली का स्विच ऑन-आफ यानी चालू बंद करने को मना किया जाता है। जिससे हवा में फैले गैस को कोई चिनगारी यानी "ज्वलन तापमान" न मिल सके और घर में आग न लगे। इसी प्रकार वाहनों के इंजन के चैम्बर में पेट्रौल, डीजल और हवा के मिश्रण को स्पार्क प्लग से चिंगारी देकर यानी "ज्वलन तापमान" देकर, मिश्रण को जला कर उर्जा प्राप्त कर इंजन को चलाया जाता है। पेट्रोल, डीजल, मिट्टी के तेल, तारपीन के तेल का ज्वलन तापमान बहुत कम होता है। दहन यानी ज्वलन कराने का मुख्य ध्येय उष्मा, गर्मी, उर्जा प्राप्त करना होता है। घरों में लकड़ी, विभिन्न कोयलों, कंडों, मिट्टी के तेल, कई गैसें जिसे हम रसोईघर में जलाते हैं एंव वाहन भी चलाते हैं, का दहन मात्र उष्मा, गर्मी पैदा कर, भोजन पकाने आदि के लिये किया जाता है।

ज्वाला यानी लौ क्या होते हैं – ज्वालायुक्त अग्नि में ज्वाला यानी लौ वह क्षेत्र होते हैं जहाँ किसी पदार्थ का दहन होने से उच्च तापमान होने के साथ ही विभिन्न रगं के प्रकाश आदि दिखते हैं, जो वायु में ज्वाला, लपटों के रुप में घटती बढ़ती यानी लपलपाती रहती है। यह उच्च तापमान यानी 400 सेंटीग्रेड से अधिक तापमान की प्रकाशित एंव भस्म करने वाली यानी विध्वसंक क्षेत्र होती है, जिसमें दहन हो रहे पदार्थ के उड़नशील घटक वाष्प बनकर, ऊपर वायु में आते ही, जल रहे ज्वालाओं से, ज्वलन तापमान से उच्च तापमान पा जाने के कारण दहन होने लगते हैं, जिससे वातावरण में उष्मा एंव प्रकाश फैलती है। ज्वाला के क्षेत्र में तापमान लगभग 400 से 1700 सेंटीग्रेड तक हो सकता है। जब दहन हो रहे पदार्थ समाप्त हो जाते हैं, तैसे ही ज्वाला बनने की प्रक्रिया भी समाप्त हो जाती है। ज्वाला के आसपास के क्षेत्र अथवा जो बर्तन आदि लौ के ऊपर रखा जाता है, वह सब गर्म हो जाता है। जब चूल्हे आदि में लकड़ी ज्वाला के साथ जलती है, तब लकड़ी में स्थिति समस्त उड़नशील, तैलिये पदार्थ गर्म होकर, वाष्प बनकर जैसे ही हवा में फैलने के लिये, लकड़ी के ऊपर और ज्वालाओं के निचले सतह से ऊपर ज्वाला क्षेत्र में पहुँचते हैं, तैसे ही ज्वलन तापमान मिल जाने के कारण उपरोक्तानुसार ज्वालाओं के साथ जलने लगती है। जब लकड़ी के समस्त उड़नशील पदार्थ समाप्त हो जाते हैं, तब मात्र कोयले की अग्नि, बगैर ज्वाला के जलती है। ऐसे ही तथ्य गूगल सर्च में, ज्वाला पर पढ़ा जा सकता है।

वाष्पन – किसी भी पदार्थ के वाष्पन में कोई रसायनिक क्रिया नही होता है। केवल अवस्था पतिवर्तन होता है यानी तरल एंव ठोस अवस्था से पदार्थ परिवर्तित होकर गैस यानी वायुरूप मे हो जाते हैं। इस वाष्पन क्रिया में हवा के आक्सीजन गैस की खपत नही होती है। वायु प्रदूषित नही होती है। इस अवस्था परिवर्तन के लिए केवल उष्मा यानी गर्मी ही चाहिए। जब तक गर्मी मिलती है तभी तक वाष्पन होता है। जिस तापमान पर कोई पदार्थ ठोस या तरल अवस्था से वाष्प यानी भाप यानी गैस अवस्था, रूप मे परिवर्तित होती है, तो उस तापमान को उस पदार्थ का "वाष्पन तापमान" कहते हैं, जो प्रत्येक सामग्री की भिन्न-भिन्न होती है तथा इस क्रिया को वाष्पन कहते हैं। अगर हमें जल को वाष्प यानी भाप में परिवर्तित करना है तो हमें, किसी उपयुक्त बर्तन में जल को रखकर किसी भी अग्नि पर रखकर गर्म कर उबालते हुए वाष्प यानी भाप में परिवर्तित कर सकते हैं। जल के वाष्प यानी भाप की शक्तियों का उपयोग कर, रेलगाड़ियां, मालगाड़ियां को चलाया जाता था। वर्तमान में भी बिजलघरों में जमीन से निकली पत्थर के कोयला को जलाकर जल के वाष्प, भाप का उपयोग कर अधिकाशं बिजली का उत्पादन होता है एंव अन्य कई कारखानों में जल के भाप से मशीनें चलाई जाती है। जब हमें किसी अग्नि को बुझाना होता है या आँच कम करना होता तब हम उस पर जल की छीटें डालते हैं या फिर जल को डालते हैं, तब जल, अग्नि की उष्मा लेकर वाष्प बनकर हवा में फैल जाता है और अग्नि की उष्मा एंव तापमान कम होकर बुझ जाता है या आँच कम हो जाता है। जल का वाष्पन 100 सेंटीग्रेड तथा पेट्रोल, डीजल, मिट्टी के तेल, तारपीन के तेल का वाष्पन तापमान 60 से 80 सेंटीग्रेड होता है। जब घर में भोजन पकवान आदि बनता है तब उनके उड़नशील घटक सामग्री गर्म होकर यानी वाष्प बनकर उनकी भिन्न-भिन्न सुगधं हवा वातावरण में फैलने लगता है और हमें उन-उन व्यजंनों मसालों आदि की सुगंध नसिका से ग्रहण होती है एंव हम बगैर देखे पहचान जाते हैं कि क्या पक रहा है। यदि किसी कढ़ाई या तवा आदि में थोड़ा घृत रखकर गर्म किया जाय तब उसका तापमान "वाष्पन तापमान" से अधिक होने और "ज्वलन तापमान" से कम होने पर, वह वाष्प यानी धुवाँ बनकर हवा में चारों ओर फैलेगा और उसकी सुगंध फैलेगी। यदि ताप यानी गर्मी बढ़ा कर उसका तापमान "ज्वलन तापमान" से ज्यादा कर दिया जाय तब वह ज्वालाओं के साथ जलने लगेगा और उसकी सुगंध पास वाले को भी नही मिलेगा।

इसी प्रकार हम यज्ञ के घृत एंव हव्य के रसायनों को किसी उपयुक्त वर्तन में रखकर किसी भी अग्नि पर रखकर गर्म करते हुए फैला सकते हैं एंव अग्निहोत्र यज्ञ के मात्र भौतिक लाभ ही पा सकते हैं। इसे हम कोयला या कंडा की मध्यम आँच की अग्नि में बहुत ही धीरे धीरे डालते हुए भी फैला सकते हैं। यदि हम अग्नियों में जल्दी जल्दी, ज्यादा ज्यादा सामग्रियां डालेगें तो अग्नि बुझ जायेगी। यज्ञ के समस्त लाभों को प्राप्त करने हेतु, इसे समस्त निर्धारित कर्मकाण्डों के साथ करना चाहिए।

- शेष अगले अंक में

.....यदि किसी कढ़ाई या तवा आदि में थोड़ा घृत रखकर गर्म किया जाय तब उसका तापमान "वाष्पन तापमान" से अधिक होने और "ज्वलन तापमान" से कम होने पर, वह वा प यानी धुवाँ बनकर हवा में चारों ओर फैलेगा और उसकी सुगंध फैलेगी। यदि ताप यानी गर्मी बढ़ा कर उसका तापमान "ज्वलन तापमान" से ज्यादा कर दिया जाय तब वह ज्वालाओं के साथ जलने लगेगा और उसकी सुगंध पास वाले को भी नही मिलेगा। इसी प्रकार हम यज्ञ के घृत एंव हव्य के रसायनों को किसी उपयुक्त वर्तन में रखकर किसी भी अग्नि पर रखकर गर्म करते हुए फैला सकते हैं एंव अग्निहोत्र यज्ञ के मात्र भौतिक लाभ ही पा सकते हैं। इसे हम कोयला या कंडा की मध्यम आँच की अग्नि में बहुत ही धीरे धीरे डालते हुए भी फैला सकते हैं। यदि हम अग्नियों में जल्दी-जल्दी, ज्यादा-ज्यादा सामग्रियां डालेगें तो अग्नि बुझ जायेगी। यज्ञ के समस्त लाभों को प्राप्त करने हेतु, इसे समस्त निर्धारित कर्मकांडो के साथ करना चाहिए। .....

अब 1 या 2 नहीं बल्कि 3 बच्चे पैदा कर सकेंगे चीनी नागरिक

चीन में जनसंख्या नियंत्रण नीति में बड़ा बदलाव

.....भारत में जनसंख्या नियंत्रण को अनियंत्रित होकर बच्चे पैदा 8 से लेकर 10 बच्चों तक होते जनसंख्या नियंत्रण कानून देश में दो भी नहीं एक 1 बच्चे पर ही स्वयं एक समुदाय धत्ता बताते हुए कर रहा है। उनके हैं, लेकिन हिंदुओं में लागू न होते हुए भी अब प्रतिबंध लगा दिया जाता है। इस तरह जो हमारे रिश्ते-नाते हैं जिनमें चाचा, चाची, ताई, ताऊ, मौसा मौसी, बुआ, फूफा, भाई, भाभी, आदि कहा से लाओगे? हमारे ये सारे रिश्ते सब जल्दी से खत्म होते जा रहे हैं और यह अपने आप में एक बहुत बड़ी समस्या खड़ी होने वाली है। .....

चीन की जनसंख्या भारत से लगभग 6 करोड़ ज्यादा एक अरब 41 करोड़ है और वहां आबादी पर काबू रखने के लिए बेहद आक्रामक तरीके से प्रयास होता रहा है। चीन में लंबे समय तक एक बच्चे की नीति को सख्ती से लागू किया गया था। कई सालों बाद नीति बदल गई और लोगों को दो बच्चे पैदा करने की छूट दी गई। लेकिन, जन्म पर नियन्त्रण की इस नीति में अब एक बड़ा बदलाव आया है। चीन में लोगों को तीन संतानों की अनुमति दे दी गई है। जनगणना में आए आंकड़ों में जन्मदर में हो रही गिरावट को देखते हुए चीन ने तीन बच्चों की नीति अपनाने की घोषणा की है।

चीन की जनसंख्या पिछले कई दशकों के मुकाबले सबसे धीमी गति से बढ़ रही है। पिछले दस सालों में यहां आबादी बढ़ने की औसत वार्षिक दर 0.53 फीसदी रही है। यानी चीन में बुजुर्गों की संख्या बढ़ रही है और बच्चे पैदा होने की दर धीमी है। हालांकि, चीन अब भी दुनिया का सबसे ज्यादा आबादी वाला देश है। चीन ने 2016 में दशकों से चली आ रही एक बच्चे की नीति को खत्म कर दिया था लेकिन, इसके बाद लागू हुई दो बच्चों की नीति से भी जन्मदर बढ़ाने में कुछ खास फायदा नहीं मिला।

चीन के मौजूदा फैसले को कम्युनिस्ट पार्टी के शीर्ष अधिकारियों की बैठक में राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने मंजूरी दी, लेकिन एमनेस्टी इंटरनेशनल जैसी मानवाधिकार संस्था का कहना है कि पुरानी नीतियों की तरह ये नीति भी यौन और प्रजनन अधिकार का उल्लंघन करती है। एमनेस्टी इंटरनेशनल की चीन प्रमुख जोशुआ रोजेसवाइग कहती हैं, "सरकार को इससे कोई मतलब नहीं होना चाहिए कि लोग कितने बच्चे पैदा करते हैं, अपनी जन्म नीति में बदलाव करने की बजाए चीन को लोगों की इच्छा का सम्मान करना चाहिए और लोगों के परिवार नियोजन के फैसलों पर से नियंत्रण खत्म करना चाहिए।" लेकिन, चीन में जन्म संबंधी नीति में बदलाव की संभावना लंबे समय से जताई जा रही थी। यहां तक कि जनगणना के आंकड़े आने के बाद जन्म पर पूरी तरह नियंत्रण हटाने के भी कयास लगाए जाने लगे थे। चीन में बच्चों की संख्या सीमित करने की नीति जनसंख्या नियंत्रण के अहम उपायों में से एक रही है। देश में इसे बेहद सख्ती के साथ लागू किया गया। वर्ष 1979 की एक बच्चे की नीति के तहत उसका उल्लंघन करने वालों को नौकरी तक गंवानी पड़ी, सजा का सामना करना पड़ा और जबरन गर्भपात तक हुए। करीब 36-37 सालों तक इसी नीति को बनाए रखने के बाद आखिर चीन को 2016 में दो बच्चों की अनुमति देनी पड़ी। अब पांच सालों में ही ये छूट बढ़कर तीन बच्चों तक आ गई है।

इसके पीछे बड़ी वजह है चीन की घटती जन्म दर, बूढ़ी होती आबादी और कामकाजी लोगों की कमी को माना जा रहा है। वहां की जनगणना के मुताबिक चीन में पिछले साल करीब एक करोड़ 20 लाख बच्चे पैदा हुए थे जबकि साल 2016 में ये संख्या एक करोड़ 80 लाख थी। 2021 में आया ये आंकड़ा 1960 के बाद से सबसे कम है। ये जनगणना 2020 में की गई थी।

इससे जनसंख्या तो कम हुई है लेकिन आबादी का ढांचा बदल गया है। साल 2019 में चाइना अकेडमी ऑफ सोशल साइंसेज के एक अध्ययन में देश की कम होती श्रम शक्ति और बूढ़ी आबादी को लेकर चिंता जताई गई थी। रिपोर्ट का कहना था कि इन दोनों बदलावों के बेहद प्रतिकूल परिणाम हो सकते हैं। इस शताब्दी के मध्य तक चीन की जनसंख्या घटकर एक अरब 36 करोड़ हो जाएगी लेकिन श्रम शक्ति गिरकर 20 करोड़ पर पहुंच जाएगी। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक चीन निम्न और मध्यम आय वाले अन्य देशों के मुकाबले तेजी से बूढ़ा हो रहा है। 60 साल से ऊपर के लोगों का अनुपात 2010 में 12.4 प्रतिशत था जो 2040 में बढ़कर 28 प्रतिशत हो जाएगा। वहीं, सामाजिक और आर्थिक बदलाव चीन में उम्रदराज लोगों की देखभाल की व्यवस्था बदल रहे हैं। भविष्य में हर नौजवान दंपत्ति पर चार या उससे जयादा ऐसे बुर्जुगों की जिम्मेदारी होगी जिन्हें देखभाल की जरूरत है।

चीन की जनसंख्या नियंत्रण नीति में हुए बड़े बदलाव से भारत को भी कुछ अवश्य सीखना चाहिए। भारत में जनसंख्या संतुलन की बहुत बड़ी आवश्यकता है, वैसे तो हमारी जनसंख्या चीन से 6 करोड ही कम है लेकिन भारत में एक समुदाय जनसंख्या नियंत्रण को धत्ता बताते हुए अनियंत्रित होकर बच्चे पैदा कर रहा है। उनके 8 से लेकर 10 बच्चों तक होते हैं, लेकिन हिंदुओं में जनसंख्या नियंत्रण कानून देश में लागू न होते हुए भी अब दो भी नहीं एक 1 बच्चे पर ही स्वयं प्रतिबंध लगा दिया जाता है। इस तरह जो हमारे रिश्ते-नाते हैं जिनमें चाचा, चाची, ताई, ताऊ, मौसा मौसी, बुआ, फूफा, भाई, भाभी, आदि कहा से लाओगे? हमारे ये सारे रिश्ते सब जल्दी से खत्म होते जा रहे हैं और यह अपने आप में एक बहुत बड़ी समस्या खड़ी होने वाली है। चीन ने पहले एक बच्चे का सख्त कानून बनाया, फिर उसे तोड़ा, दो बच्चों की छूट दी, अब तीन बच्चों की छूट दी लेकिन ध्यान देने वाली बात ये है कि अब वहां तीन बच्चों की छूट का भी असर नहीं हो रहा क्योंकि मानसिकता प्रभावित हो गई। इसलिए भारतीय हिन्दुओं को समय रहते अपनी मानसिक दशा को बदलना होगा, कम से कम 2 बच्चे अवश्य होने चाहिए, नहीं तो देश भी कमजोर और बूढ़ा हो जाएगा और हमारे रिश्ते नाते भी प्रभावित हो जाएंगे। इस असन्तुलन का इतना बुरा असर पड़ेगा कि सब कुछ प्रभावित हो जाएगा। इसलिए देश की उस आबादी को भी जागना चाहिए जो महंगाई को और अन्य अनेक समस्याओं को आगे रखकर एक बच्चे को जन्म दे रहे हैं, क्या महंगाई और समस्याएं केवल हिंदुओं के लिए ही हैं? और किसी के सामने समस्या नहीं है? देश में एक जनसंख्या को लेकर असंतुलन की स्थिति आज सामने आ रही है जो लगातार बढ़ रही है, इस पर भी हमें विचार करना चाहिए। नहीं तो चीन वाली स्थिति बिना कानून के हमारे सामने खड़ी हो जाएगी और हम कुछ नहीं कर पाएंगे। चीन अब कानून पर कानून बनाते रहे उससे कुछ असर जल्दी में तो होता हुआ हमें नहीं दिखता। इसलिए जनसंख्या को लेकर हमें जागना चाहिए।

वैदिक विद्वान पं. रामलाल जी के नाम पर न्यूयार्क में सड़क का नामकरण

पूज्य पण्डित रामलाल जी परिव्राजक के नाम पर न्यूयॉर्क की एक सड़क का नामकरण किया गया है। फरवरी 2020 में 92 वर्ष की आयु में पूज्य पण्डित जी का निधन हुआ था। उनकी जन्म भूमि ग्याना दक्षिण अमेरिका है। 60 वर्ष से अधिक तक वे न्यूर्याक में रहे और आर्य समाज मन्दिर में रह कर हिन्दू निवासियों के मध्य वेद धर्म, संस्कृति, संस्कार को पोषित किया। वे विश्व प्रचारक थे। पूज्य पण्डित जी को श्रद्धांजलि देते हुए न्यूयॉर्क में एक गली का नामकरण पण्डित जी के नाम पर किया गया है।

उनकी छोटी बहन माता उषा जी नीदरलैण्ड में हिन्दी भाषा की प्राध्यापिका रही हैं और वर्तमान में वे सेवानिवृत्त होकर संस्कृति संस्कार सिंचन का कार्य कर रही हैं।

शताब्दी पूर्व भारत से बंधुआ मजदूर के रूप में जो भारतीय सज्जन विदेश गए थे वे आज भी अपना धर्म, भाषा संस्कृति संस्कार नहीं भूले, यह हम सब के लिए गर्व व सन्तोष-प्रेरणा की बात है।

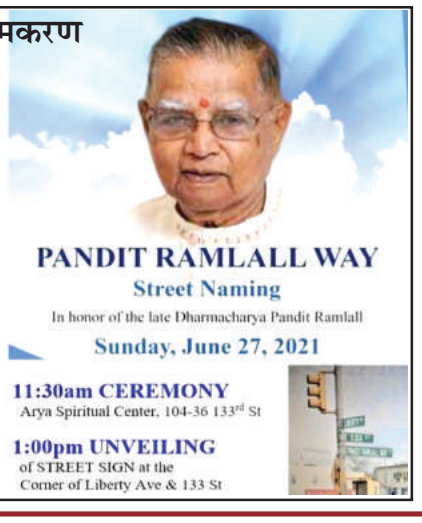

प्रथम पृष्ठ का शेष

महर्षि दयानन्द के बारे में .....

ज्ञातव्य है कि यह पुस्तक कई वर्षों से चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जींद; महर्षि दयानन्द विश्वविद्याल, रोहतक; चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के बी.एड. द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम में पढ़ाई जा रही थी, जिसके लेखक डॉ. राजेश कुमार वशिष्ठ हैं। पुस्तक के पृष्ठ 71 एवं 141 पर महर्षि दयानन्द जी के जीवनकाल, उनके गुरु, शुद्धि आन्दोलन, डी.ए.वी., गुरुकुल कांगड़ी के सम्बन्ध में अनेक भ्रामक बातें लिखी गई हैं।

प्रकाशक ने अपनी गलती मानते हुए अधिकारियों को आशवासन दिया कि पुराने संस्करण को नष्ट करके महर्षि दयानंद सरस्वती जी एवं आर्य समाज के ऐतिहासिक तथ्यों का सुधार करके ही पुस्तक पुनः प्रकाशित की जाएगी।

कोरोना से प्रभावित गरीब, आदिवासी असहाय, नि:शक्त परिवारों के लिए अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा राशन वितरण

नॉर्थ ईस्ट के कार्बी आंगलांग, मध्य प्रदेश के झाबुआ, बामनिया एवं थांदला के हजारों परिवारों को राशन वितरण

कोविड-19 की दूसरी दूसरी लहर से प्रभावित लोगों के लिए अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, दिल्ली के सौजन्य से इस संस्था के शाखा दयानंद सेवाश्रम बोकाजान में दिनांक 1 जुलाई, 2021 अन्न वितरण का कार्यक्रम किया गया ।

श्री लीला बोरा जी सचिव- दयानंद सेवाश्रम संघ, बोकाजान की अध्यक्षता में यह कार्यक्रम श्री संतोष कुमार शास्त्री समन्वयक- अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, पूर्वोत्तर के नेतृत्व में में चला जिसमें श्री रवि आर्य, श्री राजीव शास्त्री, श्री परमेश्वर साहू , कार्बी आंग्लांग ऑटोनॉमस काउंसिल के PWD मन्त्री श्री माधुर्य ढेकिआल फूकन ने भाग लिया।

'अन्न दानम् परम् दानम्' का यह पुण्य कार्य दानदाता श्री दीनदयाल गुप्त डॉलर ट्रस्ट, कोलकाता, श्री विनय आर्य महासचिव- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, व श्री जोगिंदर आर्य- महासचिव अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, दिल्ली द्वारा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में चलाया जा रहा है।

इससे पूर्व 21 जून, 2021 को अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ दिल्ली कि ओर से मध्यप्रदेश के आदिवासी क्षेत्र जिला झाबुआ के बामनिया एवम थांदला में प्रतिदिन जरूरतमंदों को राशन वितरण का कार्य किया जा रहा है। यहां के परिवारों को आटा, दाल, चावल, तेल, मसाले आदि का वितरण आचार्य दयासागर के नेतृत्व में किया गया।

ज्ञात हो कि करोना की पिछली लहर में भी दयानंद सेवाश्रम संघ ने 4000 परिवारों में राशन वितरण किया था। सेवाश्रम संघ सदैव अपनी जिम्मेदारी को निभाता रहा है और सेवा कार्य निरंतर करता रहता है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजनाओं के लिए सहयोग/दान अब और भी आसान: QR कोड स्कैन करते ही होगा भुगतान

आपको जानकर हर्ष होगा कि बैंक द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को डिजिटल पेमेंट हेतु कोड़ जारी किया गया है। अब आप किसी भी पेमेंट माध्यम - पेटीएम, फोन पे, गूगल पे, मास्टर/वीजा रुपये, भीम पे - से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित किसी भी योजना/प्रकल्प के लिए सहयोग एवं दान राशि का भुगतान केवल मात्र क्यू.आर. कोड को स्कैन करके कभी भी-कहीं से भी कर सकते हैं।

आप इस कोड के माध्यम अपने आर्यसमाज की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को देय दशांश एवं वेद प्रचार राशियों का भी भुगतान कर सकते हैं।

आप द्वारा इसके माध्यम से भेजी गई राशि तत्काल सभा को प्राप्त हो जाएगी। कृपया भुगतान करते ही आपके पास जो मैसेज आए उसका स्क्रीन शॉट लेकर अथवा सीधे उस मैसेज को 9540040388 पर व्हाट्एप्प अथवा टेलिग्राम कर दें, जिससे आपको तुरन्त रसीद जारी की जा सके।

- विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)

आर्यसमाज कर रहा है पश्चिम बंगाल में यास चक्रवात से

प्रभावित परिवारों के आवास का पुन:निर्माण

पूर्व मेदिनीपुर जनपदान्तर्गत यास चक्रवात से हुए जलप्लावन में सैकड़ों गांव भूमिसात हो गये। खाने का अन्न, पहनने के वस्त्र, रहने का घर, सब कुछ समुद्र का पानी ले गया, हा-हाकार की स्थिति है।चारों ओर जीवन में अन्धकार ही अन्धकार दिखाई दे रहा है। पीने का पानी तक नही है। बेघर हुए लोगों को आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के अन्तर्गत प्रान्तीय आर्य वीर दल बंगाल के सानिध्य में आर्य वीरों के माध्यम से आर्य समाज काशीपुर हल्दिया द्वारा लोगों के उजड़े घरों को बसाने कार्य वेद प्रचार ट्रस्ट के माध्यम से प्रारम्भ किया । 13 जून 2021 को आवास पुनर्निर्माण कर पूर्व मेदिनीपुर जनपदान्तर्गत एरियाखाली निवासी 'श्री सपन बारुई' को समर्पित किया गया ।

- आचार्य योगेश शास्त्री

उ6 पर

Makers of the Arya Samaj : Maharishi Dayanand Saraswati

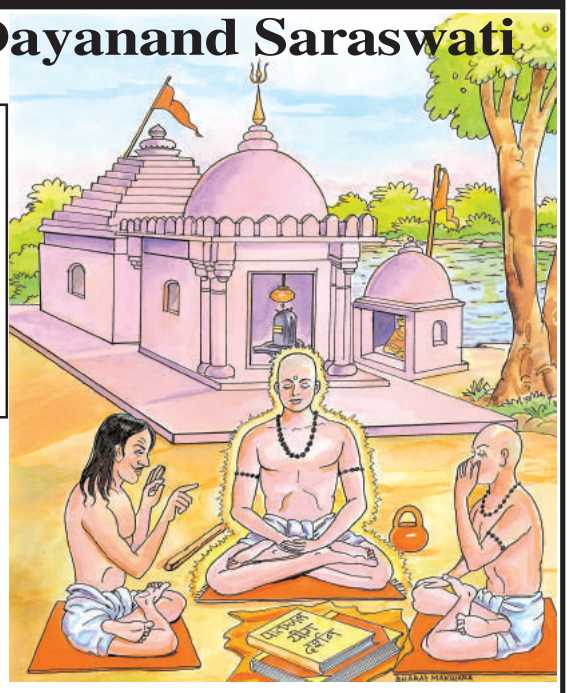

Continue From Last issue

After saying this Swami Dayanand left. Then he went to Badri Nath, a place of pilgrimage for the Hindus. He did not stay long atthis place. He then wandered along the banks of the river Alakh Nanda, even thought it was not an easy thing to do. It was terribly cold there, and also very dangerous. Beasts of prey prowled everywhere and nothing could be had to eat. At one place the cold was so severe that Swami Dayanand fell down senseless but his life was saved by some kind hearted hill-men. These people took him to their cottage and looked after him till he became quite well again.

Swami Dayanand was an untiring wanderer. He loved to see new places and new men, and was at home everywhere. But the main purpose of his wanderings was to find a person who could show him the path to truth. As soon as he got well, he set out on his travels again. He went to Ram Pur where he met a sadhu named Ram Giri. He had long conversations with him, but even these did not satisfy him. So he left for Kashi Pur, but he did not stay there, and moved on to another place.

On his way to this place he fell a prey to doubts and melancholy. "What is the goal of life?" he asked himself. "Why is man born? Here am I doing nothing useful. I have suffered many hardships, but these have led to nothing. I have not yet got what I want. Why should failure and disappointment be my lot? It is better that 1 should now put an end to this miserable life of mine." But he felt that it was cowardly to die by one's own hands. "Man should face life's trials and disappointments manfully and not be frightened by them," he said to himself. "It is better to die in pursuit of one's object than to die in despair." So once more he steeled his determination to achieve his object. After this he visited many other places . He went to Muradabad and Sambhal and other cities.

But the Ganges had a great fascination for him. He loved to be near it, and to hear the murmur of its waters in his ears. It pleased him to see its clear pure waters and the trees growing on its banks. From these he got immense strength and comfort.

But he did not entirely waste his time in moving from one place to another. Whenever he got any leisure he devoted himself to the study of some book; and in this respect his interests were many. He even studied a book on physiology. It contained an account of the human body, its limbs, muscles and arteries. To him it appeared as if the account was not based on truth. But he did not like to form his opinion till he had tested for himselfwhatever he had read.

.....He was very much interested in yoga or the science of holding one's breath, because it gives one perfect control over one's body and mind. During all these journeys Swami Dayanand had only one object in view. It was to find a guru who could teach him how to overcome death and to find God. But he knew this was not an easy thing to do. Still he persevered. Knowing that in the places sacred to the Hindus lived some holy persons he went there. Yet nowhere could he find a saint or a holy man. Thus he visited holy places like Hardwar, Rishikesh, Rudra Pryag, and Gupt Kashi. But nowhere did he come across a single person who could settle his doubts.....

After this Swami Dayanand visited Kanpur and Allahabad, two famous cities in the United Provinces. Then he made up his mind to see the source of the river Narmada. He hoped he would be able to find some yogis there. For many months he wandered along the banks of this river, but nowhere did he come across a holy man. Still he did not give up hope.

These were the most difficult years in the life of Swami Dayanand. He had to bear cold and hunger and had to pass sleepless nights. Many a time he had no place of shelter, and very often his life was in danger. He had no companion during these travels, but was all alone. Still he endured all these hardships simply because he wanted to find a guru who would teach him true wisdom and right conduct. It may be asked, What is the good of a guru? But it shou Id be understood that according to the Hindu Shastras no body can perfect himself without sitting at the feet of a guru.

Swami Dayanand was now thirty-six years old, but he had acquired little of any value. He had travelled thousands of miles on foot an had seen many places, but he had not found anybody who could act as his true guide in life. This should not make us think that all these years had been altogether wasted. Swami Dayanand had hardened his body during these travels so thathe could now stand cold and hungeras none else could. He had also acquired the capacity to suffer, to face disappointments and to put up with failures. He had also made use of his leisure these travels had done to his body, mind and soul, was immense.

To be continued.....
With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

संस्कृत वाक्य प्रबोध

सेव्यसेवकप्रकरणम्

गतांक से आगे – संस्कृत	हिन्दी
300. भो मंगलदास! सेवार्थं कैङ्कर्यं करिष्यसि?	हे मंगलदास! सेवा के लिये नौकरी करेगा?
301. करिष्यामि।	करूंगा।
302. किं प्रतिमासं मासिकं ग्रहितुमिच्छसि?	प्रति महीने कितना वेतन लेना चाहता है?
303. पञ्च रूप्याणि।	पांच रुपये।
304. मयैतावद्दास्यते चेद्यथायोग्या परिचर्या विधेया।	मैं इतना दूंगा जो तुझ से ठीक-ठीक सेवा हो सकेगी।
305. यदाहं भवन्तं सेविष्ये तदा भवानपि प्रसन्न एव भविष्यति।	जब मैं आपकी सेवा करूंगा तब आप भी प्रसन्न ही होंगे।
306. मार्जनं कुरु।	झाड़ू दे।
307. दन्तधवनमानय।	दातून ले आ।
308. स्नानार्थं जलमानय।	नहाने के लिए जल ला।
309. उपवस्त्रं देहि।	अंगोछा दे।
310. आसनं स्थापय।	आसन रख।
311. पाकं कुरु।	रसोई कर।
312. हे सूद! त्वयाऽन्नं व्यञ्जनं च सुष्ठु सम्पादनीयम्।	हे रसोइये! तू अन्न और शाक आदि उत्तम बना।
313. अद्य किं किं कुर्याम्?	आज क्या-क्या करूं?
314. पायसमोदकौदनसूपरोटिकाशाकान्युप व्यञ्जनादीनि चापि।	खीर, लड्डू, चावल, दाल, रोटी, शाक और चटनी आदि भी।

क्रमशः - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

पृष्ठ 2 का शेष

श्रीराम के नाम पर कैसा बवाल?

क्योंकि इसी दौरान गुरुग्राम में किसी मोहम्मद बरकत ने दावा किया कि कुछ हिन्दुओं ने उसे घेर कर मारा, उसकी इस्लामी गोल टोपी फेंक दी और जय श्री राम बोलने के लिए मजबूर किया। पूरे देश में शोर मच गया हरकत में आई गुरुग्राम पुलिस ने 15 लोगों को हिरासत में लिया, 50 के करीब सीसीटीवी फुटेज खंगालीं, और अंत में इस नतीजे पर पहुँची कि बरकत अली के साथ मार-पीट तो हुई, लेकिन न ही उसकी टोपी किसी ने फेंकी और न ही जय श्री राम बोलने के लिए मजबूर किया गया।

यानि ऐसी एक नहीं अनेकों घटनाएँ पिछले कुछ समय हो चुकी है लेकिन इसके बाद भी ऐसी खबरें और नेरेटिव सामने आते रहे। शायद इसका मकसद विश्व भर खोफ बन चुका नारा एक तकबीर की हीन भावना से बचने के लिए नया नेरेटिव घड़ा जाना है। ताकि ये कहा जा सके देखों जय श्री राम कह कर भी हमला हो रहे है। इसमें मीडिया इनका रिक्सा गली-गली घर घर चला रहा है लेकिन हर बार इनका नेरेटिव धड़ाम हो जाता है। इसलिए अगली बार जब कोई ऐसा मामला आये तो दु:ख या शोर मचाने से पहले गुरु गोविन्द जी कही लाइन जरुर याद कर ले कि हाथ को तेल के डिब्बे में कोहनी तक डालो, फिर उसी हाथ को तिल की बोरी में डालो, जितने तिल हाथ से चिपके उतनी बार भी मुस्लिम कसम खाये, तो भी उनका भरोसा मत करना।

- सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में
आर्य विद्या परिषद की शिक्षक कार्यशाला सम्पन्न

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद द्वारा 17जून से 20 जून तक शिक्षक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामंत्री श्री विनय आर्य, आर्य विद्या परिषद के प्रस्तोता सुरेन्द्र कुमार रैली, सत्यानंद आर्य, राजीव चौधरी, डॉ. उमा शशि दुर्गा, श्रीमती वीना आर्या, श्रीमती तृप्ता शर्मा, श्रीमती अन्नू वासुदेव तथा विभिन्न विद्यालयों के चेयरमैन, मैनेजर, प्रधानाचार्यों एवं शिक्षकों सहित लगभग 250 लोगों ने भाग लिया।

वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए इसे ऑनलाइन प्रस्तुत किया गया।

इस वर्कशॉप के मुख्य विषय थे - ध्यान (मेडिटेशन), कर्मफल सिद्धांत, विद्यार्थियों में नैतिकता, मानवीय एवं चारित्रिक मूल्यों को कैसे प्रतिष्ठित किया जाए एवं कोरोनावायरस मुक्ति का एक मात्र उपाय 'यज्ञ'।

कोरोना काल में मानव दु:ख शोक, अवसाद व मानसिक तनाव से ग्रस्त है विद्यालयों के शिक्षक अभिभावक व विद्यार्थी भी इससे अछूते नहीं हैं। ध्यान योग के द्वारा तनाव को कैसे दूर करें इस विषय पर सुरेन्द्र रैली जी ने 17 और 18 जून को अपने विचार व्यक्त किए।

श्री रैली जी ने ओ३म की व्याख्या, भजन, मेडिटेशन द्वारा संध्या करवाई । बच्चों के स्तर अनुसार योग, प्राणायाम और ध्यान करवाया ।

डॉ वागीश जी ने कर्मफल सिद्धांत ईश्वर की न्याय व्यवस्था, कारण व कार्य, नैतिक व मानव मूल्यों पर सुंदर व सरल शब्दों में व्याख्या की जिसका सभी ने आनंद लिया।

श्री विनय आर्य जी ने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में यज्ञ के द्वारा ही वायु मंडल को शुद्ध किया जा सकता है इस का वैज्ञानिक महत्व भी बताया ।

अंत में सतीश चड्ढा जी ने समापन करते हुए सब का धन्यवाद किया।

- श्रीमती तृप्ता शर्मा, संयोजक

शोधग्रन्थ हेतु आर्य बलिदानियों का जीवन परिचय भेजें

भारतीय स्वतंत्रता एवं हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के पश्चात जो आर्य युवा, उपदेशक, समाज सुधारक, संन्यासी तथा चीन, पाक युद्ध में शहीद हुए हैं, उन योद्धाओं का नाम, पता निम्नलिखित फोन पर अवश्य बताएं, जिससे कि उन अमर हुतात्माओं, बलिदानियों के जीवन की विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सके। इस पुनीत कार्य में इतना ध्यान अवश्य रखें कि हुतात्मा आर्य परिवार अथवा आर्य विचारों से प्रेरित थे। इस सम्बंध में लेखक का विस्तृत एवं शोधपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित होने जा रहा है। उस ग्रन्थ में उन शहीदों का सम्मान सहित जीवन परिचय दिया जाएगा।

- डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे

सीताराम नगर, लातूर - 413351 (महाराष्ट्र) मो. 9922256597, 7028685442

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा

समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

प्रेरक प्रसंग

उत्तर प्रदेश का एक साहसी आर्यवीर

वर्ष 1942-43 ई. की घटना है। आर्यसमाज के प्रसिद्ध मिशनरी मधुर गायक श्री शिवनाथजी त्यागी बाबूगढ़ के उत्सव से वापस आ रहे थे कि मार्ग में नहर के किनारे दस शस्त्रधारी मुसलमानों ने आर्य प्रचारकों की इस मण्डली (जिसमें केवल तीन सज्जन थे) पर धावा बोल दिया। बचने का प्रश्न ही न था। मुठभेड़ हुई ही थी कि अकस्मात् मोटर साइकल पर एक आर्य रणबांकुरा जयमलसिंह त्यागी उधर आ निकला। अपने उपदेशकों को विपदा में देखकर उसने बदमाशों को ललकारा, कुछ को नहर में फेंका और शिवनाथजी त्यागी आदि सबको बचाया।

ऐसे साहसी धर्मवीरों के नाम वा काम पर हमें बहुत गर्व है।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

के अन्तर्गत

वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित

वैदिक साहित्य

अब

amazon

पर भी उपलब्ध

अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें

bit.ly/VedicPrakashan

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित

महर्षि दयानन्दकृत

सत्यार्थ प्रकाश

(उर्दू भाषा में अनुवाद)

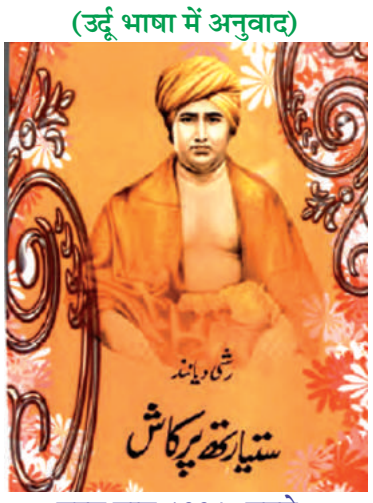

मूल्य मात्र 100/- रुपये

श्री बलदेव राज महाजन जी

(आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज)

के विशेष सहयोग से

केवल मात्र 70/- में

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्र. सभा, मो. 9540040339

शोक समाचार

आचार्य भवभूति जी का निधन

आर्यसमाज के वैदिक विद्वान, आर्य गरुकुल पहाड़गंज के पूर्व संचालक, वटुक विकास केन्द्र गुरुकुल आलियाबाद हैदराबाद तेलंगाना के आचार्य भवभूति जी का दिनांक 28 जून, 2021 को प्रात: 4 बजे शासकीय उसमानिया अस्पताल में निधन हो गया। दिनांक 27 जून को वारंगल से गुरुकुल लौटते समय उनकी कार की ट्रक से टक्कर हो गई थी। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी आचार्य नीरजा जी एवं बच्चे भी थे। वे सभी गम्भीर रूप से घायल हुए हैं।

श्रीमती राजकुमारी सलूजा जी का निधन

आर्यसमाज कालकाजी नई दिल्ली की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती राजकुमारी सलूजा जी का गत दिनों निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 4 जुलाई को प्रात: 11 बजे ऑनलाइन आयोजित हुई।

श्रीमती सत्या तायल जी का निधन

आर्यसमाज रोहिणी एवं शालीमार बाग से जुड़े उद्योगपति श्री प्रदीप तायल जी (पाईटैक्स) की धर्मपत्नी श्रीमती सत्या तायल जी का दिनांक 21 जून, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 27 जून को सायं 4 बजे ऑनलाइन आयोजित हुई।

श्री बाबूराम आर्य जी का निधन : आर्यसमाज चित्रगुप्त गंज, लश्कर ग्वालियर (म.प्र.) के मन्त्री श्री अखिलेश गुप्ता जी के पूज्य पिता श्री बाबूराम आर्य जी का दिनांक 2 जुलाई, 2021 को सायं 4 बजे निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 28 जून, 2021 से रविवार 4 जुलाई, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 02-03/07/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 30 जून, 2021

प्रथम पृष्ठ का शेष

देशभर में धर्मान्तरण का विरोध प्रदर्शन ....

काम सौंपा गया था, परंतु आज तक कोई रोक नहीं लगाई जा सकी, आज धर्मान्तरण का कार्य और तेजी से चल रहा है, विदेशों से फंडिंग आ रही है, पूरी तरह से धर्मान्तरण कराने के लिए गैंग के गैंग सक्रिय हैं, जोकि लगातार पकड़े भी जा रहे हैं। 2020 में बरेली उत्तर प्रदेश में देवरनियान पुलिस स्टेशन में जबरन धर्मान्तरण का केस रजिस्टर हुआ और तभी उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनन्दी बेन पटेल ने उत्तर प्रदेश विधि विरुद्ध धर्म परिवर्तन प्रतिरोध अध्यादेश 2020 को मंजूरी दी थी, जिसे मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने 24 नवम्बर 2020 को कैबिनेट की बैठक में विधिवत पास किया, इसमें विवाह के लिए छल कपट , प्रलोभन देने या बलपूर्वक धर्मान्तरण कराए जाने पर विभिन्न श्रेणियों के तहत अधिकतम 10 वर्ष कारावास और 50 हजार के जुर्माने का प्रावधान किया गया। परिणामस्वरूप उत्तर प्रदेश में आज लव जेहादी, जबरन धर्मान्तरण में कुछ कमी आई है।

लेकिन अभी हाल ही में उत्तर प्रदेश के आतंकवाद निरोधी दस्ते (एटीएस) ने दिल्ली के दो मौलवियों इस्लामिक दावा सेंटर के संस्थापक मोहम्मद उमर गौतम, जिसका दिल्ली के बाटला हाउस में कार्यालय है, उसे लोगों को इस्लाम अपनाने में मदद करने के लिए जाना जाता है। गौतम के साथ काम करने वाले एक अन्य मौलवी काजी जहांगीर आलम को जबरन धर्मान्तरण कराने के केस में गिरफ्तार किया है, इनके ऊपर 1000 लोगों को धर्मान्तरित करने का आरोप है, इनके ऊपर एक और प्राथमिकी दर्ज की है। ये मामला शाहजहां पुर जिले में एक हिंदू लड़की के धर्म परिवर्तन से जुड़ा है। 29 साल की लड़की ने दूसरे धर्म में धर्म परिवर्तन कर एक मुस्लिम युवक से शादी की थी। सूत्रों ने कहा कि वह अपने पति के साथ दिल्ली में है और एटीएस के अधिकारी उससे संपर्क करने की कोशिश कर रहे हैं। पिछले दिनों सिख समुदाय के लोगों ने भारी विरोध प्रदर्शन किया, साथ ही मांग की कि कश्मीर में भी धर्मान्तरण विरोधी कानून लागू किया जाए। धर्मान्तरण के इस घृणित अपराध के क्रम में जम्मू-कश्मीर में दो सिख लड़कियों का अपहरण कर जबरन धर्म परिवर्तन करवाने का मामला सामने आने के बाद सोमवार को नई दिल्ली से लेकर श्रीनगर तक सिख समुदाय के लोग सड़कों पर उतर आए। श्रीनगर में सिख समुदाय के लोगों ने इस धर्मान्तरण के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किए और लगातार सरकार से मामले में दखल देने की मांग की। वहीं, दिल्ली में जागो पार्टी ने जम्मू-कश्मीर हाउस पर विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने साथ ही जम्मू-कश्मीर के सिखों की परेशानियों को लेकर प्रधानमंत्री को पत्र भी लिखा है। इस पत्र की एक प्रति उपराज्यपाल मनोज सिन्हा को संबोधित करते हुए जम्मू-कश्मीर हाउस के सहायक रेजिडेंट कमिश्नर नीरज कुमार को भी जागो नेताओं ने सौंपी। वहीं, देहरादून में भी सिख समुदाय ने विरोध प्रदर्शन किया।

श्रीनगर में शिरोमणि अकाली दल नेता और दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष मनजिंदर सिंह सिरसा ने कहा, दो सिख लड़कियों को बंदूक की नोक पर अगवा किया गया और जबरन धर्म परिवर्तन किया गया और एक अलग धर्म के बुजुर्ग पुरुषों से शादी कर दी गई। मैं इस मसले पर गृहमंत्री अमित शाह से कार्रवाई की अपील करता हूं। सिरसा सिख लड़कियों के कथित जबरन धर्म परिवर्तन और शादी के खिलाफ विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे थे। सिरसा ने कहा कि जिस लड़की की मुस्लिम से शादी की गई है उसकी पहले से ही 2-3 शादियां हो चुकी हैं। सिरसा ने केंद्र से अपील करते हुए कहा कि यूपी और मध्य प्रदेश की तरह यहां भी धर्मांतरण कानून लागू किया जाए। वहीं, सिरसा ने दावा किया कि जम्मू-कश्मीर में दो नहीं चार लड़कियों का धर्मान्तरण हुआ है।

धर्मान्तरण की इस जालसाजी को लेकर आर्य समाज भी पूरी शक्ति के साथ केन्द्र सरकार से मांग करता है कि पिछले 100 वर्षों से चल रहे धर्मान्तरण के घृणित अपराध पर केवल उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में ही विरोधी कानून नहीं होना चाहिए बल्कि पूरे देश में जबरन धर्मान्तरण के विरोध में सख्त कानून बनना चाहिए और जो लोग छल कपट और जबरन

प्रतिष्ठा में,

धर्मान्तरण करा रहे हैं उनके ऊपर कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। क्योंकि हमारा देश अपनी संस्कृति और संस्कारों के बल पर ही विश्व गुरु रहा है, अगर इस तरह से कुछ समुदाय के लोगों के द्वारा धर्मान्तरण किया जाता रहा तो न हमारी संस्कृति बचेगी न हमारे संस्कार बचेंगे। इसलिए समय रहते केंद्र सरकार को इस घृणित अपराध के ऊपर विशेष ध्यान देना चाहिए और एक कठोर कानून बनाकर देश की गरिमा को सुरक्षित करना चाहिए। आज पूरे देश में जगह जगह धर्मान्तरण के विरोध में आवाज उठ रही है उस आवाज को पूरे देश की आवाज मानकर शीघ्र अति शीघ्र ठोस कानून बनाने की आर्य समाज मांग करता है।

- विनय आर्य, महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह